अल्फ्रेड वेबर का स्थान निर्धारण सिद्धान्त

उद्योगों के स्थान निर्धारण का प्रतिपादन सर्वप्रथम वान थुनेन ने कृषि उद्योग के लिए किया था। परन्तु औद्योगिक इकाइयों की स्थिति निर्धारण के कारकों का अन्वेषण सर्वप्रथम जर्मनी के अल्फ्रेड वेबर ने सन् 1909 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तर **'उद्योगों के स्थानीयकरण के सिद्धान्त'** (Theory of Location of Industries) में प्रतिपादित किया । इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद सन् 1929 में प्रकाशित हुआ और तभी से इनके सिद्धान्तों को प्रसिद्धि मिली।

अल्फ्रेड वेबर के सिद्धान्त उन कारकों पर आधारित हैं जो उद्योगों को एक विशेष क्षेत्र की ओर आकर्षित करते हैं। इनके अनुसार इन कारकों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है—

(1) प्राथमिक या प्रधान कारक (Primary Factors)

(2) द्वितीयक कारक (Secondary Factors)

Scanned with CamScanner

(1) प्राथमिक कारक (Primary Factors)—वेबर ने उद्योगों की स्थापना के लिए उनके लागत विश्लेषण कर उनके कारकों का अध्ययन किया । उनके अनुसार किसी भी औद्योगिक इकाई के स्थानीयकरण कारकों (Locational Factors) में दो मुख्य तत्व (i) यातायात व्यय एवं (ii) श्रम व्यय, अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। परन्तु वेबर ने यातायात व्यय को स्थान निर्धारण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना है।

(i) यातायात व्यय—वेबर के अनुसार यातायात व्यय का निर्धारण करने वाले दो मुख्य तत्व होते हैं, (अ) यातायात किया जाने वाला पदार्थ और उसका भार, तथा (ब) यातायात मार्ग की दूरी।

वेबर के अनुसार किसी औद्योगिक इकाई के उत्पादन से सम्बन्धित कच्चा माल और बाजार एक ही स्थान पर नहीं होते हैं। इस प्रकार कच्चे माल का प्राप्ति स्थान और उत्पादन के उपभोग के स्थान (बाजार) इन दोनों के बीच ही कहीं न कहीं उस औद्योगिक इकाई की स्थापना के लिए कोई न कोई आदर्श स्थान (optimum location point) का चयन किया जाता है। उदाहरण के लिए इस्पात उद्योग की स्थापना के लिए कच्चा लोहा बोकारो से तथा रानीगंज से कोयला प्राप्त करना होगा और इस्पात की बिक्री के लिये बाजार विशाखापत्तनम में है। अतः यह क्रिया में अधिक भार नहीं खोती हैं। दूसरे शब्दों में, समस्त कच्चे माल का भार निर्मित वस्तु के रूप में परिवर्तित हो जाता है। उदाहरणार्थ, कपास, जूट, ऊन, आदि इन्हें वेबर ने शुद्ध सामग्री कहा है। शुद्ध सामग्री उपयोग में लाने वाले उद्योग प्रायः बाजार की ओर आकर्षित होते हैं।

सकल सामग्री (Gross Materials)—वह कच्चा माल जो उत्पाद के निर्माण के समय अपना सम्पूर्ण अथवा आंशिक भार खो देता है, शेष भार निर्मित वस्तु के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इस्पात उद्योग में कच्चा लोहा, कोयला, चूना तथा अन्य पदार्थों के 3.2 टन भार का उपभोग करने पर केवल एक टन इस्पात तैयार होता है।

इस प्रकार यातायात व्यय के अनुसार वेबर ने उद्योगों के स्थान निर्धारण को आदर्श बिन्दु का निर्धारण (Determination of Optimal location point) नाम से स्पष्ट किया है। इसको स्पष्ट करने में वेबर ने सामग्री निर्देशांक (Material Index) और स्थान स्थानीयकरण भार (Location Weight) शब्दों का उपयोग किया है।

(1) **सामग्री-निर्देशांक** (Material Index) से तात्पर्य उस अनुपात से है जो एक वस्तु के निर्माण में काम आने वाली सामग्री के भार का निर्मित वस्तु के भार से होता है; जैसे — $\frac{\text{मिश्रित पदार्थ का भार}}{\text{तैयार माल का भार}}$।

दूसरे शब्दों में सामग्री निर्देशांक उत्पादित वस्तु और स्थानीय मिश्रित कच्चे माल के अनुपात को व्यक्त करता है। उदाहरणार्थ, एक टन इस्पात बनाने में तीन टन निर्माण सामग्री (कोयला, लौह अयस्क, चूना, मैंगनीज) प्रयुक्त होती है। स्वाभाविक है कि इस्पात उद्योग की इकाई के लिये इन तीनों नगरों को जोड़ने वाली रेखाओं से बने त्रिभुज में किसी स्थान पर आदर्श स्थान का चुनाव करना होगा।

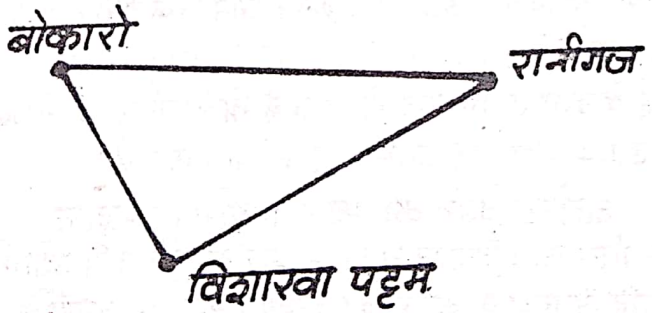

चित्र 11.1—सापेक्ष स्थिति सम्बन्ध

चुनाव करने में यातायात व्यय की दृष्टि से स्थान अनुकूल होना चाहिए। निर्मित वस्तुओं के लिए बाजार और कच्चे माल के स्रोत इनमें से किसका प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण होगा यह कच्चे माल के स्वभाव और वस्तुओं के निर्माण की रीतियों पर निर्भर करता है।

वेबर ने कच्चे माल को स्वभाव की दृष्टि से दो प्रकार का बताया है : (a) स्थानीय सामग्री अथवा (b) सर्वव्यापी सामग्री।

Scanned with CamScanner

(a) **स्थानीय सामग्री**—स्थानीय सामग्री वह सामग्री होती है जो कुछ विशेष स्थानों पर ही प्राप्त होती है। इनमें कृषि एवं खनिज पदार्थ मुख्य हैं; जैसे—लौह अयस्क, कोयला, चूने का पत्थर, लकड़ी, कपास इत्यादि। यह वस्तुएँ कुछ विशेष स्थानों पर ही प्राप्त की जा सकती हैं। इस प्रकार स्थानीय सामग्री को निर्मित माल में परिवर्तित करने के आधार पर दो भागों में विभाजित किया गया है :

(अ) **शुद्ध सामग्री** (Pure Materials)—जब कोई कच्चा माल अथवा सामग्री निर्माण प्रक्रिया में अपना भार कम नहीं होने देती अथवा सामग्री उत्पाद (कच्चा लोहा, चूना और मैंगनीज) की आवश्यकता होती है। यहाँ सामग्री निर्देशांक $\frac{8}{1} = 3$ होगा।

(ब) स्थानीयकरण भार (Location Weight) से तात्पर्य उस सम्पूर्ण भार से है जो आदर्श बिन्दु स्थान तक कच्चे माल तथा निर्मित वस्तुओं को बाजार तक परिवहन किया जाता है। सर्वत्र उपलब्ध होने वाले पदार्थ का उपयोग करने वाले उद्योगों में यह भार एक होता है क्योंकि केवल उत्पादित वस्तु का ही भार परिवहन होता है।

इस आधार पर उद्योग को बाजार के निकट स्थापित होने पर उच्च भार उद्योग के स्थान तक लाना होगा तथा बाजार तक एक टन भार ले जाना होगा। इसी आधार पर वेबर ने आदर्श बिन्दु का निर्धारण किया है। इसी आधार पर वेबर ने प्रतिपादित किया है कि सामग्री निर्देशांक एक से कम होने पर बाजार के निकट, एक से अधिक होने पर स्थानीय सामग्री के निकट तथा एक होने पर बाजार तथा सामग्री के स्थान के बीच किसी स्थान पर आदर्श स्थान बिन्दु होगा। क्योंकि इसी स्थिति में स्थान निर्धारण व्यय न्यून होगा।

(b) **सर्वव्यापी सामग्री** (Ubiquitous Materials)—वेबर के अनुसार ये वे पदार्थ हैं जो सर्वत्र उपलब्ध हैं तथा सभी स्थानों पर समान मूल्य पर उपलब्ध होते हैं; जैसे वायु, मिट्टी आदि।

(ii) **श्रम व्यय**—वेबर के अनुसार श्रम व्यय औद्योगिक स्थानीयकरण को प्रभावित करने वाला दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्रीय कारक माना जाता है। वेबर के अनुसार कुछ निश्चित श्रम केन्द्र होते हैं जहाँ श्रम सस्ता होता है, इन सस्ते केन्द्रों से श्रम अन्य केन्द्रों को गतिशील नहीं होता। अतः श्रमिकों की कार्यक्षमता एवं मजदूरी में भिन्नता होने के कारण श्रम व्यय भिन्न-भिन्न होते हैं। वेबर ने अपने अध्ययन से यह सिद्ध किया कि स्थिर श्रम केन्द्रों में नीची श्रम दरें एवं अन्य केन्द्रों पर ऊँची दरें होती हैं। श्रम क्षेत्र की शक्ति को नापने के लिए वेबर ने श्रम गुणांक शब्द का उपयोग किया है। सस्ती श्रम व्यय का लाभ उठाने हेतु श्रम स्थिर केन्द्रों की ओर आकर्षित होते हैं।

इस प्रकार औद्योगिक स्थानीयकरण यातायात की अनुकूलतम स्थिति से स्थिर श्रम केन्द्रों की ओर विचलित होता है। श्रम व्यय आदर्श बिन्दु को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण बिन्दु है किन्तु ऐसा विचलन उसी दशा में होगा जबकि नये स्थान पर उद्योग को स्थापित करने पर श्रम व्यय में होने वाली बचत यातायात व्यय में हुई वृद्धि से अधिक होगी।

(2) **द्वितीयक कारक** (Secondary Factors)—सहायक कारकों के अन्तर्गत वेबर ने उन सभी घटकों को सम्मिलित किया है जो किसी विशेष उद्योग को विशेष प्रदेश के भीतर ही वितरण पर केन्द्रीकरण एवं विकेन्द्रीकरण की रीतियों को प्रभावित करते हैं। वेबर का निश्चित मत था कि एक ही क्षेत्र में उद्यमों में पुनर्वितरण के विषय में कुछ कारक ऐसे होते हैं जो उद्योगों को उस क्षेत्र विशेष में केन्द्रित अथवा विकेन्द्रित कर देते हैं। इन सभी कारकों को बाह्य लाभ के तत्व कहा जाता है; जैसे : बीमा, बैंकिंग, विपणन की सुविधा, भूमि में रियायत आदि। जब ये तत्व केन्द्रीकरण को बढ़ावा देते हैं तो इन्हें केन्द्रीकरण घटक कहा जाता है। परन्तु कभी-कभी भूमि के महँगे हो जाने, सरकार की उदासीन नीति, स्थानीय करों की अधिकता तथा श्रम के अभाव में उस क्षेत्र विशेष में केन्द्रीकरण को बढ़ावा नहीं मिलता है तो इस प्रवृति को विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति कहते हैं।

वेबर के सिद्धान्त की आलोचना

सैद्धान्तिक दृष्टि से वेबर के विचार उद्योगों के स्थानीयकरण पर स्पष्ट हैं परन्तु उनके विचारों की आलोचना भी हुई है :

Scanned with CamScanner

(1) वेबर ने यातायात व्यय के बारे में जो विचार व्यक्त किये हैं वे त्रुटिपूर्ण हैं। यातायात व्यय अनेक अन्य बातों पर भी निर्भर करता है जैसे यातायात किये जाने वाले माल की प्रवृत्ति, सड़क या मार्ग की बनावट, यातायात के साधनों की प्रकृति जैसे स्थल, जल अथवा हवाई मार्ग आदि। इसी प्रकार माल भाड़े की ढुलाई की दर सदैव दूरी के अनुपात में नहीं बढ़ती है, जैसा कि वेबर ने माना है। कच्चे माल व उत्पादित माल पर एकसमान माल भाड़ा नहीं लगता जैसा कि वेबर ने माना है।

(2) वेबर ने अपना सिद्धान्त केवल यातायात व्यय और श्रम व्यय पर ही आधारित किया है, इनके अतिरिक्त और भी अनेक घटक हैं जो स्थानीयकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा देते हैं (जैसे भूमि की रचना, जलवायु तथा सरकारी नीतियाँ)।

(3) वेबर के इस सिद्धान्त के लिए कहा गया है कि ये सिद्धान्त अत्यन्त सरल एवं काल्पनिक हैं।

(4) वेबर ने सम्भावित माँग एवं पूर्ति के स्थानिक परिवर्तनों के प्रभावों को भी कोई महत्व नहीं दिया।

(5) कुछ विद्वानों की मान्यता है कि वेबर के कच्चे पदार्थों का वर्गीकरण (सर्वप्राप्य और स्थानीय पदार्थ) कृत्रिम और अप्राकृतिक है।

(6) वेबर के अनुसार उपभोग के केन्द्र निश्चित होते हैं उनमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता, वास्तव में यह सत्य से परे है।

(7) वेबर का सिद्धान्त एक अत्यधिक तकनीकी विश्लेषण के आधार पर आधारित है, **यह एक कठिन सिद्धान्त है जो साधारण व्यक्ति की समझ से परे है। इस कठिनाई का मुख्य कारण यह है कि वेबर ने अनेक गुणांकों का प्रयोग किया है।**

(8) श्रम केन्द्रों की व्याख्या करते समय वेबर ने इन श्रम केन्द्रों को स्थिर माना है वास्तव में श्रम गतिशील है।

(9) अनेक उद्योगों के स्थानीयकरण में ऐतिहासिक और सामाजिक कारण भी महत्वपूर्ण कारक रहे हैं, वेबर ने उनकी उपेक्षा की है।

Scanned with CamScanner